

रविवार 7 दिसंबर, 2025

विषय — ईश्वर ही एकमात्र कारण और निर्माता है

स्वर्ण पाठ: व्यवस्थाविवरण 6: 4

"हे इस्राएल, सुन, यहीवा हमारा परमेश्वर है, यहीवा एक ही है;"

उत्तरदायी अध्ययन: भजन संहिता 62: 1, 2, 5-8, 11

- ¹ सचमुच मैं चुपचाप होकर परमेश्वर की ओर मन लगाए हूँ; मेरा उद्धार उसी से होता है।
- ² सचमुच वही, मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है, वह मेरा गढ़ है; मैं बहुत न डिगूंगा॥
- ⁵ हे मेरे मन, परमेश्वर के साम्हने चुपचाप रह, क्योंकि मेरी आशा उसी से है।
- ⁶ सचमुच वही मेरी चट्टान, और मेरा उद्धार है, वह मेरा गढ़ है; इसलिये मैं न डिगूंगा।
- ⁷ मेरा उद्धार और मेरी महिमा का आधार परमेश्वर है; मेरी दृढ़ चट्टान, और मेरा शरणस्थान परमेश्वर है।
- ⁸ हे लोगो, हर समय उस पर भरोसा रखो; उससे अपने अपने मन की बातें खोलकर कहो; परमेश्वर हमारा शरणस्थान है।
- ¹¹ परमेश्वर ने एक बार कहा है; और दो बार मैं ने यह सुना है: कि सामर्थ्य परमेश्वर का है।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. यूहन्ना 5: 44

- ⁴⁴ तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो अद्वैत परमेश्वर की ओर से है, नहीं चाहते, किस प्रकार विश्वास कर सकते हो?

2. इब्रानियों 11: 6 (वह जो)

- ⁶ ... क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है।

3. 2 राजा 18: 1, 3, 5-7 (से:), 9, 10 (से:), 11 (से1st.), 13, 17 (से1st.), 19, 20, 28 (सुनो), 29 (होने देना), 30, 36, 37

- 1 एला के पुत्र इस्राएल के राजा होशे के तीसरे वर्ष में यहूदा के राजा आहाज का पुत्र हिजकिय्याह राजा हुआ।
- 3 जैसे उसके मूलपुरुष दाऊद ने किया था जो यहोवा की दृष्टि में ठीक है वैसा ही उसने भी किया।
- 5 वह इस्राएल के परमेश्वर यहोवा पर भरोसा रखता था, और उसके बाद यहूदा के सब राजाओं में कोई उसके बराबर न हुआ, और न उस से पहिले भी ऐसा कोई हुआ था।
- 6 और वह यहोवा से लिपटा रहा और उसके पीछे चलना न छोड़ा; और जो आज्ञाएं यहोवा ने मूसा को दी थीं, उनका वह पालन करता रहा।
- 7 इसलिये यहोवा उसके संग रहा; और जहां कहीं वह जाता था, वहां उसका काम सफल होता था। और उसने अश्शूर के राजा से बलवा कर के, उसकी आधीनता छोड़ दी।
- 9 राजा हिजकिय्याह के चौथे वर्ष में जो एला के पुत्र इस्राएल के राजा होशे का सातवां वर्ष था, अश्शूर के राजा शल्मनेसेर ने शोमरोन पर चढ़ाई कर के उसे घेर लिया।
- 10 और तीन वर्ष के बीतने पर उन्होंने उसको ले लिया। इस प्रकार हिजकिय्याह के छठवें वर्ष में जो इस्राएल के राजा होशे का नौवां वर्ष था, शोमरोन ले लिया गया।
- 11 तब अश्शूर का राजा इस्राएल को बन्धुआ कर के अश्शूर में ले गया, और हलह में ओर गोजान की नदी हाबोर के पास और मादियों के नगरों में उसे बसा दिया।
- 13 हिजकिय्याह राजा के चौदहवें वर्ष में अश्शूर के राजा सन्हेरीब ने यहूदा के सब गढ़ वाले नगरों पर चढ़ाई कर के उन को ले लिया।
- 17 तौभी अश्शूर के राजा ने तर्तान, रबसारीस और रबशाके को बड़ी सेना देकर, लाकीश से यरूशलेम के पास हिजकिय्याह राजा के विरुद्ध भेज दिया। सो वे यरूशलेम को गए और वहां पहुंच कर ऊपर के पोखरे की नाली के पास धोबियों के खेत की सड़क पर जा कर खड़े हुए।
- 19 रबशाके ने उन से कहा, हिजकिय्याह से कहो, कि महाराजाधिराज अर्थात् अश्शूर का राजा यों कहता है, कि तू किस पर भरोसा करता है?
- 20 तू जो कहता है, कि मेरे यहां युद्ध के लिये युक्ति और पराक्रम है, सो तो केवल बात ही बात है। तू किस पर भरोसा रखता है कि तू ने मुझ से बलवा किया है?
- 28 तब रबशाके ने खड़े हो, यहूदी भाषा में ऊंचे शब्द से कहा, महाराजाधिराज अर्थात् अश्शूर के राजा की बात सुनो।
- 29 राजा यों कहता है, कि हिजकिय्याह तुम को भुलाने न पाए, क्योंकि वह तुम्हें मेरे हाथ से बचा न सकेगा।
- 30 और वह तुम से यह कह कर यहोवा पर भरोसा कराने न पाए, कि यहोवा निश्चय हम को बचाएगा और यह नगर अश्शूर के राजा के वश में न पड़ेगा।
- 36 परन्तु सब लोग चुप रहे और उसके उत्तर में एक बात भी न कही, क्योंकि राजा की ऐसी आज्ञा थी, कि उसको उत्तर न देना।
- 37 तब हिलकिय्याह का पुत्र एल्याकीम जो राजघराने के काम पर था, और शेब्ना जो मन्त्री था, और आसाप का पुत्र योआह जो इतिहास का लिखने वाला था, अपने वस्त्र फाड़े हुए, हिजकिय्याह के पास जा कर रबशाके की बातें कह सुनाई।

4. 2 राजा 19: 1, 2, 6, 7 (से;), 14, 15, 19, 20, 32 (वह)-34

- 1 जब हिजकिय्याह राजा ने यह सुना, तब वह अपने वस्त्र फाड़, टाट ओढ़कर यहोवा के भवन में गया।

- ² और उसने एल्याकीम को जो राजघराने के काम पर था, और शेब्ना मन्त्री को, और याजकों के पुरनियों को, जो सब टाट ओढ़े हुए थे, आमोस के पुत्र यशायाह भविष्यद्वक्ता के पास भेज दिया।
- ⁶ तब यशायाह ने उन से कहा, अपने स्वामी से कहो, यहवा यों कहता है, कि जो वचन तू ने सुने हैं, जिनके द्वारा अशशूर के राजा के जनों ने मेरी निन्दा की है, उनके कारण मत डर।
- ⁷ सुन, मैं उसके मन में प्रेरणा करूंगा, कि वह कुछ समाचार सुन कर अपने देश को लौट जाए, और मैं उसको उसी के देश में तलवार से मरवा डालूंगा।
- ¹⁴ तब यहोवा के भवन में जा कर उसको यहोवा के साम्हने फैला दिया।
- ¹⁵ और यहोवा से यह प्रार्थना की, कि हे इस्राएल के परमेश्वर यहोवा! हे करूबों पर विराजने वाले ! पृथ्वी के सब राज्यों के ऊपर केवल तू ही परमेश्वर है। आकाश और पृथ्वी को तू ही ने बनाया है।
- ¹⁹ इसलिये अब हे हमारे परमेश्वर यहोवा तू हमें उसके हाथ से बचा, कि पृथ्वी के राज्य राज्य के लोग जान लें कि केवल तू ही यहोवा है।
- ²⁰ तब आमोस के पुत्र यशायाह ने हिजकिय्याह के पास यह कहला भेजा, कि इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि जो प्रार्थना तू ने अशशूर के राजा सन्हेरीब के विषय मुझ से की, उसे मैं ने सुना है।
- ³² इसलिये यहोवा अशशूर के राजा के विषय में यों कहता है कि वह इस नगर में प्रवेश करने, वरन इस पर एक तीर भी मारने न पाएगा, और न वह ढाल ले कर इसके साम्हने आने, वा इसके विरुद्ध दमदमा बनाने पाएगा।
- ³³ जिस मार्ग से वह आया, उसी से वह लौट भी जाएगा, और इस नगर में प्रवेश न करने पाएगा, यहोवा की यही वाणी है।
- ³⁴ और मैं अपने निमित्त और अपने दास दाऊद के निमित्त इस नगर की रक्षा कर के इसे बचाऊंगा।

5. यूहन्ना 17: 1 (से 3rd.), 3 (यह), 11 (पवित्र), 13, 17, 20, 21, 26 (वह)

- ¹ यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखे आकाश की ओर उठाकर कहा,
- ³ और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने।
- ¹¹ हे पवित्र पिता, अपने उस नाम से जो तू ने मुझे दिया है, उन की रक्षा कर, कि वे हमारी नाई एक हों।
- ¹³ यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य जो उसे परमेश्वर ने इसलिये दिया,
- ¹⁷ सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है।
- ²⁰ मैं केवल इन्हीं के लिये बिनती नहीं करता, परन्तु उन के लिये भी जो इन के वचन के द्वारा मुझ पर विश्वास करेंगे, कि वे सब एक हों।
- ²¹ जैसा तू हे पिता मुझ में हैं, और मैं तुझ में हूं, वैसे ही वे भी हम में हों, इसलिये कि जगत प्रतीति करे, कि तू ही ने मुझे भेजा।
- ²⁶ और मैं ने तेरा नाम उन को बताया और बताता रहूंगा कि जो प्रेम तुझ को मुझ से था, वह उन में रहे और मैं उन में रहूं॥

6. यहूदा 1: 25

- ²⁵ उस अद्वैत परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता की महिमा, और गौरव, और पराक्रम, और अधिकार, हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा जैसा सनातन काल से है, अब भी हो और युगानुयुग रहे। आमीन॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 502: 27-29

रचनात्मक सिद्धांत - जीवन, सत्य और प्रेम - ईश्वर है।

2. 9: 17-24

क्या आप "अपने भगवान को अपने प्रभु और अपने सभी प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखते हैं"? इस आदेश में बहुत कुछ शामिल है, यहां तक कि सभी भौतिक संवेदना, स्नेह और पूजा का समर्पण भी। यह ईसाई धर्म का एल डोराडो है। इसमें जीवन का विज्ञान शामिल है, और केवल आत्मा के दिव्य नियंत्रण को मान्यता देता है, जिसमें आत्मा हमारा स्वामी है, और भौतिक अर्थ और मानव का कोई स्थान नहीं होगा।

3. 167: 17-19

एक ईश्वर के पास और आत्मा की शक्ति का लाभ उठाने के लिए, आपको ईश्वर से प्रेम करना चाहिए।

4. 119: 21-24

भगवान कुदरती अच्छाई है, और उसे सिर्फ अच्छाई के विचार से दिखाया जाता है; जबकि बुराई को अननेचुरल माना जाना चाहिए, क्योंकि यह आत्मा, यानी भगवान की प्रकृति के खिलाफ है।

5. 109: 4-10

ईसाई विज्ञान निर्विवाद रूप से प्रकट करता है कि मन ही सब कुछ है, कि केवल वास्तविकताएं ही दिव्य मन और विचार हैं। लेकिन, इस बड़ी बात को तब तक सही सबूतों से सपोर्ट नहीं किया जा सकता, जब तक कि बीमारों को ठीक करके इसका दिव्य सिद्धांत साबित न हो जाए और इस तरह यह पक्का और दिव्य साबित न हो जाए। एक बार यह सबूत देख लेने के बाद, किसी और नतीजे पर नहीं पहुँचा जा सकता।

6. 301: 5-23

कुछ व्यक्ति यह दर्शाते हैं कि क्राइस्टियन साइंस का अर्थ प्रतिबिंब से क्या है। स्वयं के लिए, नश्वर और भौतिक व्यक्ति पदार्थ प्रतीत होता है, लेकिन पदार्थ की उसकी भावना में त्रुटि शामिल है और इसलिए सामग्री, लौकिक है।

दूसरी ओर, अमर, आध्यात्मिक व्यक्ति वास्तव में पर्याप्त है, और शाश्वत पदार्थ, या आत्मा को दर्शाता है, जो मनुष्यों के लिए आशा है। वह परमात्मा को दर्शाता है, जो एकमात्र वास्तविक और शाश्वत इकाई है। यह प्रतिबिंब

नश्वर अर्थ को पारलौकिक लगता है, क्योंकि आध्यात्मिक मनुष्य की पर्याप्तता नश्वर दृष्टि को पार कर जाती है और यह केवल दिव्य विज्ञान के माध्यम से प्रकट होती है।

जैसा कि ईश्वर पदार्थ है और मनुष्य ईश्वरीय छवि और समानता है, मनुष्य को आत्मा के पदार्थ की इच्छा करनी चाहिए, केवल पदार्थ की, न कि पदार्थ की और वास्तव में उसने ऐसा किया है। यह विश्वास कि मनुष्य के पास कोई अन्य पदार्थ या मन है, आध्यात्मिक नहीं है और पहले आज्ञा को तोड़ता है, आप एक ईश्वर को, एक मन को स्वीकार करेंगे।

7. 91: 5-8

आइए हम खुद को इस विश्वास से मुक्त करें कि मनुष्य ईश्वर से अलग हो जाता है, और केवल ईश्वरीय सिद्धांत, जीवन और प्रेम का पालन करता है। यहाँ सभी सच्चे आध्यात्मिक विकास के लिए प्रस्थान का महान बिंदु है।

8. 106: 7-11

ईश्वर ने मनुष्य को अविभाज्य अधिकार प्रदान किए हैं, जिनमें स्वशासन, तर्क और विवेक शामिल हैं। मनुष्य तभी उचित रूप से स्वशासित होता है जब वह अपने निर्माता, ईश्वरीय सत्य और प्रेम द्वारा सही तरीके से निर्देशित और शासित होता है।

9. 31: 4 (से.), 10-13

यीशु ने स्वीकार किया कि मांस का कोई संबंध नहीं है।

उन्होंने आत्मा, ईश्वर को एकमात्र निर्माता, और इसलिए सभी के पिता के रूप में मान्यता दी।

सबसे पहले ईसाई कर्तव्यों की सूची में, उन्होंने अपने अनुयायियों को सत्य और प्रेम की उपचार शक्ति सिखाई।

10. 166: 15-17 अगला पृष्ठ

भटका हुआ मानव मन अपने आप में असंगत है। उसी से निर्मल शरीर की उत्पत्ति होती है। बीमारी में कम उपयोग के रूप में भगवान की उपेक्षा करना एक गलती है। शारीरिक परेशानी के समय में उसे अलग करने और ताकत के समय का इंतजार करने के बजाय जिसमें हम उसे स्वीकार करते हैं, हमें सीखना चाहिए कि वह बीमारी में हमारे लिए सभी चीजें कर सकता है जैसा कि वह स्वास्थ्य में करता है।

शरीर विज्ञान और स्वच्छता के पालन के माध्यम से स्वास्थ्य को ठीक करने में असफल, निराश व्यक्ति अक्सर उन्हें छोड़ देता है, और अपने चरम में और केवल अंतिम उपाय के रूप में, भगवान की ओर मुड़ता है। परमात्मा के मन में अमान्य विश्वास ड्रग्स, हवा और व्यायाम की तुलना में कम है, या उसने पहले माइंड का सहारा लिया होगा। शक्ति का संतुलन अधिकांश चिकित्सा प्रणालियों द्वारा पदार्थ के साथ होने के लिए माना जाता है; लेकिन जब माइंड अंतिम बार पाप, बीमारी और मृत्यु पर अपनी महारत हासिल करता है, तो मनुष्य सामंजस्यपूर्ण और अमर हो जाता है।

क्या हमें एक भौतिक ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह अपनी व्यक्तिगत इच्छा से बीमारों को ठीक कर दे, या हमें उस अनंत दिव्य सिद्धांत को समझना चाहिए जो ठीक करता है? यदि हम अंधविश्वास से ऊपर नहीं उठते, तो चिकित्सा विज्ञान प्राप्त नहीं होता, तथा इन्द्रिय-अस्तित्व के स्थान पर आत्मा-अस्तित्व को नहीं समझा जा सकता। हम जीवन को दैवीय विज्ञान में तभी ग्रहण करते हैं जब हम भौतिक बोध से ऊपर रहते हैं और उसे ठीक करते हैं। अच्छाई या बुराई के दावों की हमारी आनुपातिक स्वीकृति हमारे अस्तित्व के सामंजस्य को निर्धारित करती है, - हमारा स्वास्थ्य, हमारी लंबी उम्र और हमारी ईसाई धर्म।

हम दो स्वामी की सेवा नहीं कर सकते हैं और न ही दिव्य विज्ञान को भौतिक इंद्रियों के साथ देख सकते हैं। ड्रग्स और स्वच्छता सफलतापूर्वक सभी स्वास्थ्य और पूर्णता के दिव्य स्रोत की जगह और शक्ति को नष्ट नहीं कर सकते। यदि ईश्वर ने मनुष्य को अच्छा और बुरा दोनों बनाया है, तो मनुष्य को ऐसा ही रहना होगा। परमेश्वर के कार्य में क्या सुधार हो सकता है? पुनः, आधार में त्रुटि निष्कर्ष में अवश्य दिखाई देगी।

11. 264: 13-21

जैसा कि नश्वर भगवान और मनुष्य के बारे में अधिक सही दृष्टिकोण प्राप्त करते हैं, सृष्टि की बहुपक्षीय वस्तुएं, जो पहले अदृश्य थीं, दृश्यमान हो जाएंगी। जब हम महसूस करते हैं कि जीवन आत्मा है, तो कभी भी नहीं, न ही इस मामले में, यह समझ आत्म-पूर्णता में विस्तारित होगी, सभी को ईश्वर में मिल जाएगी, अच्छा होगा, और किसी अन्य चेतना की आवश्यकता नहीं होगी।

आत्मा और उसके स्वरूप ही होने का एकमात्र यथार्थ हैं। आत्मा के माइक्रोस्कोप के तहत पदार्थ गायब हो जाता है।

12. 11: 22-32 (से 2nd.)

हम जानते हैं कि पवित्रता पाने के लिए पवित्रता की इच्छा आवश्यक है; लेकिन अगर हम सब से ऊपर पवित्रता की इच्छा रखते हैं, तो हम इसके लिए सब कुछ त्याग देंगे। हमें ऐसा करने के लिए तैयार होना चाहिए, ताकि हम पवित्रता के लिए एकमात्र व्यावहारिक मार्ग में सुरक्षित रूप से चल सकें। अपरिवर्तनीय सत्य को नहीं बदल सकती, न ही केवल प्रार्थना हमें सत्य की समझ दे सकती है; लेकिन प्रार्थना, भगवान की इच्छा को जानने और करने की उत्कट अभ्यस्त इच्छा के साथ मिलकर, हमें सभी सत्य में लाएगी। ऐसी इच्छा को श्रव्य अभिव्यक्ति की बहुत कम आवश्यकता होती है। यह विचार और जीवन में सबसे अच्छा व्यक्त किया गया है।

13. 29: 14-16

क्रिश्चियन साइंस में निर्देशित लोग इस गौरवशाली धारणा तक पहुँच चुके हैं कि ईश्वर ही मनुष्य का एकमात्र लेखक है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्विणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6